International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 120-123

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 120-123
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-03-2017
Accepted: 23-04-2017

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

अमरचंद बर्मन
म0 फिल्0 संस्कृत डॉ. सी. वी.
रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

मालविकाग्निमित्रम् में जीवविज्ञान

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, अमरचंद बर्मन

सारांश
महाकवि कालिदास की कृतियों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि कवि को विविध प्रकार के शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान था। अतएव उनकी प्रतिभा बहु–मुखी मानी जा सकती है। महाकवि कालिदास ने अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में संगीत शास्त्र, कामशास्त्र, शिक्षा शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, वैद्यक शास्त्र का वर्णन आया है। जिससे महाकवि के विविध शास्त्रों का ज्ञान प्रकाशित हो जाता है। इन सभी के अलावा महाकवि ने प्रकृति एवं जीव–जगत को प्रकृति के उन जीव जगत के विविध पक्ष का वर्णन किया है। प्शु पक्षियों की प्रकृति की ओर मनोगत स्वाभाविक चेष्टाओं का अध्ययन करके इनकी क्रीड़ाओं का मनोरम चित्रण करने में महाकवि कालिदास ने सफलता अर्जित की है।
महाकवि कालिदास ने जीव–जगत के जीवों, पशु–पक्षियों, कीट पतंगों आदि का अपने नाटक 'मालविकागिनमित्रम्' में वृहद् चित्रण प्रस्तुत किया है। जो हमें जीव–जन्तुओं एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रेरित करती है।
इस शोध पत्र में जीव विज्ञान के महत्व को प्रतिपादित किया जायेगा ताकि प्रकृति के जीव–जन्तुओं का विनाश एवं ह्रास के प्रति सभी लोगों में जागरूकता उत्पन्न किया जा सके।
आधुनिक वैज्ञानिक युग में जीवधारियों को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत विभक्त किया गया है। सामान्यतः जीवधारियों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।
1. पशु जगत।
2. पक्षी जगत।
3. कीट जगत आदि।
महाकवि अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में जीव–जगत को इन्हीं तीन श्रेणियों में विभाजित कर उनके विषय में विचार किया है। अतः जीव–विज्ञान का वर्णन मालविकाग्निमित्रम् में महाकवि कालिदास ने इस प्रकार चित्रण कर प्रस्तुत किया है।

कुट शब्दः मालविकाग्निमित्रम्, जीवविज्ञान, पशु–पक्षियों, कीट पतंगों, जीव–जन्तुओं, वन्य प्राणियों

प्रस्तावना

पशु जगत

पशु जगत के अंतर्गत उन वन्य प्राणियों को सम्मिलित किया जाता है जिनका संबंध मानव के साथ प्राचीन काल से चला आ रहा है जैसे– अश्व (घोड़ा), गज (हाथी), मृग (हरिण), वनभैंसा, सिंह आदि जिनमें से कुछ वन्यप्राणी पालतू भी है, जिनके साथ मनुष्य का निजतापूर्ण सम्बन्ध रहा है जिनका चित्रण कालिदास ने अपने नाटक में इस प्रकार किया ळें

गज (हाथी)

महाकवि कालिदास ने अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में गज का वर्णन किया है। पशुओं में गज एक ऐसा पशु है जो वैदिककाल से लेकर आज तक के काव्य में अविरल रूप से वर्णित किया गया है वैदिक वाङग्मय में इभः, गजः, नागः, वारणः, हस्तिन् शब्दों से (हाथी) गज को अभिहित किया गया है। गज भारत, अफ्रीका, श्रीलंका, बर्मा तथा मालवा में अधिकांशतः पाया जाता है। भारत में हिमालय की घाटियों मैसूर व असम, केरल के अलावा मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के वनों में देखे जाते हैं। हाथी एक शाकाहारी जीव है, यह एक बुद्धिमान पशु है। हाथी को भारत में भगवान गणेश के रूप में पूजा जाता है एवं तीज त्यौहारों एवं उत्सवों में सजाया जाता है। हाथी को राजा महाराजा के द्वारा अपनी सेना में शामिल किया जाता था।
कालिदास ने अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में विदूषक के संवाद में दो बलशाली हाथियों का आपस में लड़ने का चित्रण किया है।

''मैवंचण्डि अन्योन्य कलह प्रियर्योमत्तहस्तिनोरेकतर स्मिन निर्जिते कुतः उपषम।'' [1]

अर्थात् देवी (धारिणी) से वार्तालाप करते हुए विदूषक कहते है ऐसा न कहें चण्डी इन दोनों झगडालू मदमस्त हाथियों में से जब तक एक की हार नही हो जाएगी तब तक शान्ति कैसे होगी ?

अश्व (घोड़ा)

घोड़ा का संस्कृत साहित्य में बहुत अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वेदों में अश्व के लिये अक्रः अश्वः मया, स्याः वाजिन, सप्ती आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वैदिककाल के बाद वीरकाव्य साहित्य में भी अश्व प्रमुख पशु के रूप में वर्णित है। अश्व को राजा महाराजाओं ने अपनी सेना में वाहन के रूप में सम्मिलित करते थे। अश्व विश्व के सभी देशों में पाया जाता है। घोड़ा एक बुद्धिमान एवं स्वामीभक्त पशु होता है एवं मनुष्य का सबसे अच्छा मित्र होता है।

घोड़ा एक बलवान पशु है जिसका उपयोग सवारी करने में, गाड़ी खीचनें में एवं समान लाद कर लाने–लेजाने के लिए करते हैं।

महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् में घोड़ा का वर्णन इस प्रकार किया है। अश्व मेघयज्ञ की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

> ''ततः परान्पराजित्य वसुमित्रेण धन्विना ।
> प्रसह्य द्वियमाणों में वाजिराजो निवर्तितः ।।'' [2]

यहां राजा धारिणी के समक्ष सेनापति पुष्पमित्र का पत्र पढ़ते हुए कहते है कि हम यह बताना चाहते है कि अश्वमेघ की दीक्षा लेकर मैंने एक वर्ष की अवधि के लिए रज्जुहीन घोड़ा छोड़ा था और जिसकी रक्षा के लिए सैकड़ों राजकुमारों के साथ वसुमित्र को भेजा था। ''तत्पश्चात् शत्रुओं को परास्त करके धनुर्धर वसुमित्र ने हमारे अपहृत अश्वराज को बलपूर्वक छीन लिया।''

मृग (हरिण)

संस्कृत साहित्य में मृग अर्थात् हरिण का अनेक स्थान पर वर्णन मिलता है। वैदिक वाङग्मय में रूरूः, कृष्णः पुषत् हरिण, कुलुंग पुष्टी, रोहित शब्द मृग के वाचक है। संस्कृत साहित्य में बारहसिंगा सांभर, चीतल, कस्तुरीमृग, चिंकारा, चौसिंगा आदि सभी के लिये मृग का नाम लिया जाता है। कई रंगो में पाये जाने वाले मृग सुन्दर व नयनप्रिय प्राणी है। रामायण में भी मृग मरीचिका शब्द का उल्लेख मिलता है। मृग वन में स्वच्छंद विचरण करने वाले एक शाकाहारी प्राणी है जिसे दर्शकों के मनोरंजन हेतू उद्यानों में भी रखा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि कस्तुरी नामक सुगन्धी तत्व मृग के नाभि में पाया जाता है।

> मालविकाग्निमित्रम् नाटक में हरिण की तुलना हृदय से करते हुए कवि कालिदास ने राजा से कहलाया है–
> ''शरीरं क्षामं स्यादसति दयितालिडाग्नसुखे
> भवेत्सास्त्रं चक्षुः क्षणमपि न सा दृश्यत इति।
> तया सारङग्क्ष्या त्वमसि न कदाचिदृि रहितं
> प्रसक्त निर्वाणे हृदय परितापं व्रजसि किम् ।।'' [3]

काम से पीड़ित राजा विदूषक से कहते हैं कि प्रियतमा को हृदय से न लगा सकने के कारण मेरे शरीर का सूखते जाना सम्भव है उसे क्षणभर के लिय भी देख न सकने के कारण आंखो का अश्रुपूर्ण भी होना सम्भव है परन्तु मेरे हृदय तुम तो कभी उस मृगाक्षी प्रियतमा से अलग नही हुए हृदय को शीतल करने वाली वह प्रियतमा तो साथ ही रही, फिर तुम क्यों सन्तप्त हो रहे हो ?

बाघ (व्याघ्र)

सिंह के बारे में संस्कृत साहित्य में अनेकानेक वर्णन मिलता है। सिंह को पंचास्यः, हर्यक्षः केसरी तथा हरि का पर्यायवाची शब्द है। सिंह को वन का राजा कहा जाता है। सिंह जंगली एवं मांसाहारी पशु है। विभिन्न कहानियों में सिंह की कहानी प्रसिद्ध है। मालविगाग्निमित्रम् नाटक में सिंह की भयावहता को दिखाया गया है। सिंह का आरोपण करते हुए विदूषक कहता है कि–

> ''भवांनपि सूनापरिसरचर इव गृध्र अभिषलोलुपो भीरूकक्ष।''[4]

भूखे राजा द्वारा खाना मांगने पर विदूषक कहते हैं कि मुझे अवसर प्राप्त हो गया किन्तु मेघावृत चन्द्रिका के सामान मालविका के दर्शन भी पराधीन ही है। आप भी मांस बेचने वाले व्याघ्र के घर पर मंडराने वाले गिद्ध के समान उस पर ललचाये हुए भी है और साथ ही डरते है।

बन्दर

बंदर एक शाकाहारी प्राणी है। बन्दर को कपि, हरि, लंगूर आदि अनेक नामो से जाना जाता है। बन्दर मानव का मित्र होता है एवं नकलची प्राणी है। यह बच्चों के मनोरंजन भी करता है। बन्दर पेड़ों में रहने वाले प्राणी है फूल पत्तों फल को खाते है। बन्दर का उछलकूद प्रसिद्ध होता है। यह कई देशों में अलग–अलग प्रजातियों में पाया जाता है। बन्दर को भारत में पूजे जाते है और हनुमान का प्रतीक माना जाता है।

मालविकाग्निमित्रम् मे पीले बन्दर की भयावहता को बताया गया है।

> ''देव कुमारी वसुलक्ष्मीः कन्दुकमनुधावन्ती पिङ़गलवानरेण बलवस्त्रा सिताङ्ग निषण्णा देव्याः प्रवातकिसलपमिववेयमानां न किंचित प्रकृति प्रतिपद्यते।'' [5]

राजा को जयसेना (प्रतिहारी) बताती है कि महाराज कुमारी वसुलक्ष्मी गेंद के पीछे दौड़ रही थी उसी समय पीले बन्दर ने भयभीत कर दिया। वह देवी के अंक में हवा में पत्ते के समान कांपती है, चेतना शून्य है।

पशु जगत

कोयल (कोकिला)

संस्कृत में कोयल का स्थान प्रमुख माना गया है। वैदिक साहित्य में अद्यतन संस्कृत साहित्य तक कोयल का वर्णन मिलता है वैदिक साहित्य मे कोयल के लिए पिकः, कोक आदि शब्द का प्रयोग किया गया है। अमरकोष मे कोयल के लिए वनप्रियः कोकिलः पिलः परभ्रतः का उल्लेख मिलता है। कोयल अफ्रीका, भारत, इग्लैण्ड, चीन आदि देशों में पाया जाता है। कोयल का रंग काला होता है और कौए के छोटे आकार का पक्षी है। कोयल की कुक सुरीली व मीठी लगती है। संस्कृत के अलावा हिन्दी के कवियों ने कोयल को प्रकृति प्रेमी के रूप में अपने कविता में स्थान दिया है। कोयल आम जामुन तथा कीड़े मकोड़े खाता है इसकी शरद ऋतु से बसंत ऋतु के आगमन में ध्वनि तक सुनी जाती है।

महाकवि कालिदास जी ने मालविकाग्निमित्रम् में कोकिल का वर्णन इस प्रकार किया है–

> ''उन्मत्तानां श्रवणसुभगैःकुजितैः कोकिलानां
> सानु कोषं मनसिज रूजः सह्यतां पृच्छतेव।
> अङ्गे चूतप्रसवसुर भिर्दक्षिणो मारूतो में
> सान्द्रस्पर्शः करतल इव व्यापृतो माधवेन।।''[6]

राजा विदूषक से कोयल के बारे में कहता है– मतवाले कोकिलो की, कानों को सुहाने वाली कूको में मानो बसन्त ऋतु मुझ पर दया दिखाते हुए पूछ रहा हो– क्यों प्रेम की पीड़ा सही जा रही है। इधर खिली हुई आम्रमंजरियों के गंध मे बसा हुआ ऐसा ज्ञात होता है मानो बसन्त ने अपना सुखद हाथ मेरे ऊपर रख दिया हो।

मोर (मयूर)

वैदिक काल से ही मोर के लिए मयूर नीलकण्ठ, भुजंग भुक शिखावल मेद्य नामों से उल्लेख मिलता है। मोर विश्व के कई देशों में पाया जाता है। भारत में राजस्थान, असम, हिमाचल की तराई तथा मध्यप्रदेश में बहुतायत में पाया जाता है। भारत में मोर पक्षी का बहुत अधिक महत्व है इसलिए भारत का राष्ट्रीय पक्षी के रूप में मोर को सम्मान दिया गया है। श्रीकृष्ण के द्वारा भी मोर पंख धारण किया गया था। मोर और मोरनी का नृत्य मन को मोह लेने वाला होता है।

''तूणीरपट्टपरिणद्व भुजान्तरालमापार्ण्णिलम्बिशिखिबर्ह कलापधारि।
कोदण्डपाणि विनदत्प्रतिरोधकानापात दुश्प्रसहमाविर भूदनीयम।।''[7]

परिव्राजिका राजा से कहती है तत्पश्चात् तूणीरपट द्वारा दोंनो बाहु, मध्यों को कसे, पैर तक लटकते हुए मयूर पृच्छों से अलंकृत धनुर्धर सामने आने वालो के कालस्वरूप और गरजता हुआ दस्यु सैन्य प्रकट हुआ। इसी प्रकार परिवाजिका राजा से कहती है।
''जीमूतस्त नित विषडिभि उदग्रीवैः मयूरैः अनुसितस्यपुस्करस्य अर्थात् मृदंग के शब्दो को मेद्य गर्जन समझकर ये मोर ऊपर मुंह करके देखने लगे और दूर तक गुंजने वाली यह मध्यम स्वर से उठी हुई मायूरी नामक की ध्वनि मन को मदयुक्त बना रही है।

हंस

वैदिक साहित्य में हंस को हंस, अतिः आदि शब्दों से अभिहित किया गया है। हंस एक सुन्दर पक्षी है जो प्रायः विश्व के कई देशों में पाया जाता है। हंस घास–फूस, जड़े, बीज आदि खाता है। हंस–हंसनी की क्रीडा तालाब व समुद्र कां सुशोभित करता है।
महाकवि कालिदास ने अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम् में हंस का वर्णन इस प्रकार किया है।

''पत्रच्छायास हंसा मुकुलितनयना दीर्घिकाप पदिमनीनां
सैधान्यत्यर्थतापाटलभि परिचय देषि पारा वतानि।
बिन्दूत्क्षेपात्पि पासुः परिसरति शिखी भ्रान्ति मद्रास्यिन्त्रं
सवैरूस्त्रैः समग्रैस्त्वमिव नृपगुणैर्दीव्यते सप्तसरितः।।''[8]

वैतालिक कहता है बावलियों मे कमल की पंखुड़ियों की छाया मे हंस आंख मूंदकर विश्राम कर रहे है। धूप से भवन ऐसा तप गया है कि छज्जों पर कबूतर तक नही बैठ रहे है। चलते हुए रहट से उछलती हुई पानी की बूँदे पीने के लिए मोर उसके चारों ओर चक्कर काट रहे है और सूर्य अपनी सब किरणें लेकर उसी प्रकार चमक रहा है जैसे आप अपने सम्पूर्ण राजसी गुणों से चमकते है।

सारस पक्षी

सारस पक्षी को वैदिक साहित्य में स्थान दिया गया है। सारस पक्षी को बगुला, वक् आदि नामों से जाना जाता है। यह पक्षी समुद्र या नदी के आसपास रहने वाले होते है एवं मछली, कीट पतंगो को खाते है। इसका रंग सफेद होता है। मालविकाग्निमित्रम् नाटक में कवि कालिदास ने इस प्रकार वर्णन किया है–

''त्वदुपलभ्य समीपगतां प्रियां हदयमुच्छसितं मम विक्लवम्।
तरूवृतां पथिकस्य जलार्थिनः सरितमारसितादिव सारसात्।।''[9]

मालविका की उपस्थिति के बारे में जब विदूषक राजा को बताता है तब राजा कहता है सारस पक्षी के कलरव से वृक्ष की झुरमुट में छिपी नदी धारा को प्यासे पथिक की भांति तुम्हारे आश्वासन पर अपनी प्रियतमा को समीप मे प्राप्त कर मेरा यह उत्कण्ठित हृदय प्रफुल्लित हो उठा है।

चातक (पपीहा)

वैदिक साहित्य में चातक शब्द का प्रयोग नहीं मिलता किन्तु कपिन्जल शब्द मिलता है जो सम्भवतः चातक, तितर आदि का वाचक है संस्कृत साहित्य में चातक का वर्णन कहीं–कहीं प्राप्त होता है। चातक पक्षी के बारे मे कहा जाता है कि यह केवल वर्षा का जल ग्रहण करता है। मालविकाग्निमित्रम् में चातक पक्षी का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

''मया नाम शुष्क धन गर्जितऽन्तरिक्षे जल्पानमिच्छवा चातकायितम।।''[10]

वदूषक गणदास से कहता है अर्थात् तो क्या मैं कोरे गर्जनशील बादलों से मिटाने की आशा करने वाला पपीहा ही बना रह गया।

चकवा–चकवी

संस्कृत साहित्य में चकवा –चकवी का वर्णन मिलता है। चकवा चकवी नदियों के किनारे निवास करते है चकवा व चकवी के अनेक आख्यान जगत मे प्रचलित है। मालविकाग्निमित्रम् में चकवा पक्षी आरोपण करते हुए अग्निमित्र मालविका को देख कर कहता है–

''अहं रथाङ्गनामेव प्रिया सहचरीव में।
अनुनुज्ञात संपर्का धारिणी रजनीव नौ।।''[11]

अर्थात चक्रवाक के तुल्य हूँ मेरी प्रिया चक्रवाकी के समान साथ ही है। हम दोनों को मिलन से रोकने वाली यह धारिणी रात्रि–सदृश है।

कीट–पतंग जगत

मालविकाग्निमित्रम् में पशु–पक्षियों के साथ–साथ अन्य कीड़े मकोड़ो का भी वर्णन मिलता है। उनमें से प्रमुख निम्नलिखित है :–

भ्रमर

संस्कृत साहित्य में भ्रमर के अनेक जगह पर वर्णन मिलता है। भ्रमर (भौंरा) के लिए मधुव्रत, मधुकर, पुष्पहिल, भुजंग, षटपद् एवं अलि नाम का वर्णन किया गया है। भौंरे का रंग काला होता है और फूलों से रस ग्रहण करता है। कवियों ने अपनी रचनाओं में भ्रमर को स्थान दिया है। मालविकाग्निमित्रम् में भ्रमर का वर्णन कई जगह पर आया है। तृतीय अंक पांचवा श्लोक में राजा विदूषक से कहता है –

''रक्ता शोकरूचा विशेषित गुणों बिम्बा धरालक्तकः
प्रत्याख्यात विशेषक कुरबकं श्यामावदातारूणम्
आक्रान्ता तिलक क्रिया च तिलकैर्लग्नद्विरेकाज्जनैः
सावशेव मुख प्रसाधनविधौ श्रीर्माधवी योषिताम् ।।''[12]

अर्थात् राजा कहता है रक्ताशोक पुष्प की लालिमा से रमणियों के बिम्बसदृश अधर पर लगा हुआ अलत्तक तिरस्कृत हो रहा है। श्याम श्वेत अरूण रंग से युक्त कुरबक पुष्प के द्वारा कपोलस्थ चित्र पराजित हो रहा है। कज्जल सदृश भ्रमर वाले पुन्नाग के पुष्प ललाटस्थतिलक को पराजित कर रहे है। ज्ञात होता है कि यह बसन्त शोभा स्त्रियों के प्रसाधन की अवज्ञा कर रही है।
इसी प्रकार चतुर्थ अंक में राजा भ्रमर के बारे में कहता है।

मधुस्वरा पराभृता भ्रमरी च विवुद्धचूतसंङ्गिन्यो।
कोटर मकालवृष्टया प्रबलपुरोवातया गमिते।।[13]

अर्थात् बौरे हुए आम के साथ रहने वाली मथुर भाषिणी, कोयल और भ्रमरी दोनों को प्रचण्ड पुरवाई और असमय वर्षा ने पेड़ के कोटर मे बंद कर दिया।

सर्प

संस्कृत साहित्य में सर्प, काल सर्प, शेषनांग आदि से संबंधित अनेक कथाएं मिलती है। सर्प को भुजंग, विषधर, चक्षुश्रवा, उरम आदि नाम से जाने जाते है। मालविकाग्निमित्रम् में सर्प का उल्लेख चतुर्थ अंक मे आया है।

''छेदो दंशस्य दाहो वा क्षेतेर्वा रक्तमोक्षणम्।
पतानि दष्टमात्राणामायुष्याः प्रतिपत्तमः।।''[14]

परिव्राजिका विदूषक से कहती है दंश स्थान का छेदन दाह और मोक्षण, यह सभी उपचार सर्पदष्ट लोंगों के जीवन के उपाय माने गये है।

मधुमक्खी

मधुमक्खी का उल्लेख संस्कृत साहित्य में कही–कही पर आया है मधुमक्खी अपनी संख्या बल के लिए विख्यात है। वह फूलों के रस से छत्तों में शहद संग्रह कर रखती है और समय आने पर उसका सदुपयोग करती है। मधुमक्खियों में एक मुखिया भी होता है। मधुमक्खी झुण्ड में आक्रमण करती है। महाकवि कालिदास ने विदूषक के संवाद में मधुमक्खी का वर्णन किये है।

''उवट्टिदं णअणमहु संणिहिद मक्खिअं च।''[15]

अर्थात् विदूषक राजा से कहता है आपकी ऑखो के लिए मधु तो उपस्थित है किन्तु मधुमक्खी भी समीप में ही है अतएव सावधानी से उधर देखियेगा।

चींटी

चींटी का उल्लेख संस्कृत साहित्य में कहीं–कहीं आया है। चींटी में भी एकता का रूप देखा जाता है। चींटी एक छोटा जीव है जो कतारबद्ध चलने के लिए प्रसिद्ध है। चींटी मरे हुए कीट एवं मीठे खाद्य पदार्थो को अपना भोजन बनाती है। मालविकाग्निमित्रम् में चींटी का उल्लेख तृतीय अंक में आया है यहॉ निपुणिका चींटी के बारे में इरावती से कहती है –

''आलोअदु भटिणी चूदड.कुर विद्यिण्णनतीणं पिपीलिजाहि दंसिदं।''[16]

अर्थात् महारानी जी देखिये। हम लोग तो आम्र कोरको को चुनना चाहती थी और इधर चींटियॉ काटने लगी।

उपसंहार

मालविकाग्निमित्रम् में वर्णित जीवों को उनके वर्गीकरण के आधार पर वर्णित किया गया है। अतः हम कह सकते है कि महाकवि कालिदास मालविकाग्निमित्रम् नाटक के अंतर्गत जीवविज्ञान का चित्रण कथा में पूर्णरूपेण सफल हुए है। कथावस्तु में छोटे–छोटे जीव जन्तुओ का सप्रयोजन उल्लेख किया गया है। कोई भी जीवों का वर्णन कथा में निरर्थक नहीं किया गया है। प्रत्येक जीवों की अपनी खास विशेषता बताई गई है विभिन्न प्राकृतिक जीवों, प्राणियों का चित्रण महाकवि ने इतनी सजीवता एवं वास्तविकता से किया है कि वे सभी मनुष्य के साथ उनके घनिष्ठ व उदात्त सम्बन्ध का चित्रण दृष्टव्य है। इस प्रकार नाटक में प्रकृति, जीव–जगत के गहन अवलोकन से हम कह सकते है कि जीवों के साथ मनुष्य के भाव के संवेदनशील संबंधो का वृहद चित्रण होता है। वे सभी सहृदय के सामाजिकों को अपने समाज के बीच सदस्य के समान दिखई देते है जो नाटक को जीव–विज्ञान के गहन परिणाम का है।

संदर्भ

1. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन पृ. सं 30
2. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 5/15
3. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 3/1
4. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन पृ. सं 59
5. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन पृ. सं 144
6. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 3/4
7. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 5/10
8. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 2/12
9. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 3/6
10. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन पृ.सं. 53
11. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 5/9
12. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 3/5
13. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 4/2
14. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन 4/4
15. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन पृ.सं. 42
16. पाण्डेय डॉ. रमाशंकर (2014) मालविकाग्निमित्रम् वाराणसी चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन पृ.सं. 85